JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संताल समाज और संस्कृति में माझी रामदास टूडू "रस्का"

पार्वती किस्कू
सहायक प्राध्यापक, संताली विभाग
रायपुर ब्लॉक महाविद्यालय
बांकुड़ा, ७२२१३४, पश्चिम बंगाल

सारांश (Abstract)
इस पृथ्वी पर किसी भी जाति की पहचान उसकी संस्कृति के माध्यम से होती है। संस्कृति के अंतर्गत उसकी कई शाखाएँ शामिल हैं। एक समय ऐसा आया जब संताल समाज की संपूर्ण सांस्कृतिक परंपराएँ विलुप्त होने की कगार पर थीं, ऐसे समय में माझी रामदास टूडू "रस्का" ने उनका अध्ययन और शोध करके उन्हें संकलित और संरक्षित किया। प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाजों और सामाजिक नियमों पर उनका अटूट विश्वास था। अपने देवी-देवताओं और संस्कृति को बचाए रखने से ही अपने धर्म की रक्षा हो सकती है—इसी विचार को ध्यान में रखते हुए उन्होंने खेरवाड़ सनताड़(संताल समाज) के लिए "खेरवाल बोंगसा धरम पुथी" की रचना की। अपनी संस्कृति को मानना और उसका संरक्षण करना हम सभी खेरवाड़ समुदाय का दायित्व है।

मुख्य शब्द (Keywords): पृथ्वी, संस्कृति, समाज, धर्म, खेरवाल।

आलेख (Article Content)

सृष्टिकर्ता की रचना अत्यंत अद्भुत है। इस सुरम्य पृथ्वी पर उन्होंने कई जीव-जंतुओं को जन्म दिया है, जिनमें मनुष्य सबसे श्रेष्ठ जीव है। मनुष्यों से ही यह सुंदर संसार सुसज्जित हुआ है। हम सभी जानते हैं कि किसी भी समुदाय की पहचान उसकी लोक-संस्कृति, रीति-रिवाज, धर्म-कर्म और साहित्य के माध्यम से होती है। संताल समाज के इतिहास से यह ज्ञात होता है कि संसार की सभी जातियों में संताल जाति अत्यंत समृद्ध और प्राचीन है, क्योंकि संताल समाज पृथ्वी की उत्पत्ति और सृष्टि-कथा के ज्ञान के साथ-साथ अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, धर्म-कर्म और साहित्य को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संजोते हुए आगे बढ़ रहा है।

हमारे बीच कई तरह की चुनौतियाँ और समस्याएँ आईं, फिर भी हमारे पूर्वजों ने हमारे अस्तित्व के मार्ग—अर्थात लोक-संस्कृति, रीति-रिवाज, धर्म और साहित्य को मौखिक रूप से और कान-दर-कान स्थानांतरित करके जीवित रखा है। आज भी यह भोर के तारे की तरह संताल समाज को आलोकित कर रहा है।

हम सभी जानते हैं कि एक समय मिशनरी और व्यवसायी इस देश में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे। व्यापार के साथ-साथ उन्होंने ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार भी शुरू किया। उस समय संताल समाज भ्रमित होकर भटकाव की ओर बढ़ रहा था। यह देखकर माझी रामदास टूडू "रस्का" शांत नहीं बैठ सके। उन्होंने जाति और समाज को बचाने के लिए देश-विदेश का भ्रमण किया और समाज के नियमों, रीति-रिवाजों, बिंती-बांखेड़ (प्रार्थना और मंत्र) को एकत्रित करके एक जागृति फैलाने वाली पुस्तक लिखी, जिसका नाम "खेरवाल बोंगसा धरम पुथी" है। प्राचीन रीति-रिवाजों और सामाजिक नियमों पर उनका गहरा विश्वास था। अपने देवी-देवताओं, परंपराओं और संस्कृति को बचाकर ही धर्म को बचाया जा सकता है। इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने खेरवाड़ समुदाय के लोगों को एक नया संदेश दिया।

इस पुस्तक में उन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों से संस्कृति के संरक्षण पर चर्चा की है। सबसे पहले उन्होंने 'छटियार' (नामकण/जन्म संस्कार) के संबंध में लिखा है कि जब प्रथम मानव पिलचु हडाम और पिलचु बुढ़ी का जन्म हुआ, तब ईश्वर (बाबा इसोर) ने मरांग बुरु से कहा था—"सातवें दिन इनका छटियार करो, उस दिन अतनाग के पत्तों में जल ग्रहण करो। बालक का नाम पिलचु हडाम और बालिका का नाम पिलचु बुढ़ी रखो।"1

इसी परंपरा के अनुसार हमारे पूर्वज प्राचीन काल से ही छटियार का कार्य करते आ रहे हैं। आज भी हम छटियार के नियम का पालन करते हैं, जैसे छटियार के अवसर पर हंडिया (चावल की शराब) अर्पित करना और प्राचीन परंपराओं के अनुसार ही सभी अनुष्ठान संपन्न करना।
बच्चे के छटियार के समय दादा-दादी का नाम दिया जाता है। यह बात छटियार गीत के माध्यम से भी व्यक्त होती है:-

"बाबा इसोर अमग हुकुम ते...
अलिं बाबा हंस-हंसली चेमे बिलि रे...
अलिं बाबा लिं जनम लेन दो...
अमगे बाबा मरांग बुरु...
सगाद बुता, जानुम धुड, हिहिड़ी रे पिपिड़ी रेम अगु केद लिं...
तेहेञ बाबा मरांग बुरु...
अरे महा रे, अतनाग सकम रे अतफ काते...
मरांग रिनिज कुड़ि लेटका...
उनि बाबा लिं छटियार ए कन दो...
अपुञ बाबा हंस चेमे दो, एगाञ बाबा हंसली चेमे दा...
हिसि बाबा लिं क़तुम केदे, हिसि बाबा हिसि गो।"2

इसी प्रकार उन्होंने विवाह (बापला) के संबंध में भी वर्णन किया है— सिरोम घुटू के सिरोम माझी के बेटे और दुगदा जानू माझी की बेटी के विवाह के माध्यम से उन्होंने संताल समाज में विवाह की संपूर्ण रीति-रिवाजों का क्रमबद्ध उल्लेख किया है। विवाह की शुरुआत से लेकर अंत तक की सभी प्रक्रियाओं—जैसे अगुआ (रायबारी) की बात, वर-वधू देखना, सगुन विचार, टका चाल, गिरा तोल (विवाह का निमंत्रण सूत), हल्दी लगाना, बारात का आगमन, सिंदूर दान तथा विभिन्न अवसरों के लोकगीतों को प्रस्तुत किया है। आज भी समाज में विवाह इन्हीं परंपराओं के अनुसार संपन्न होता है।
माझी रामदास टूडू "रस्का" ने विवाह के प्रकारों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत करके प्रस्तुत किया है:
“यह खेरवाड़ वंश के लोगों का पारंपरिक विवाह है, जिसे पिलचु हडाम और पिलचु बुढ़ी के समय से माना जाता है:-
1.राही दाड़ी बापला
2.दोला चौडाल बापला
3.हेञो बरियात बापला (जिसमें वर के पिता, भाई आदि जाकर वधू को लाते हैं)
4.तुमकी दिपिल बापला
यह अन्य प्रकार का विवाह है जो समाज के नियमों के उल्लंघन या विशेष परिस्थितियों से जुड़ा है:-
1.ओर इदि बापला (खींच कर ले जाना)
2.बं लय काते इटुद बापला (बिना बताए सिंदूर लगाना)
3.आपस में सहमति से किया गया विवाह (राजी-खुशी)
समझौते के आधार पर किया गया विवाह|”3

विवाह के जितने भी नियम पूर्वजों ने निर्धारित किए थे, उन सभी का वर्णन इस पुस्तक में मिलता है।
संताल समाज के पूजा-पाठ (बोंगा-बुरु) भी हमारी संस्कृति का एक मुख्य हिस्सा हैं। समाज में व्यक्ति के सुखी जीवन के लिए ईश्वर की आराधना आवश्यक है। इसे ध्यान में रखते हुए माझी रामदास टूडू "रस्का" ने 'बाहा बोंगा' (बाहा पर्व) के नियमों का संग्रह अपनी पुस्तक में किया है। इसका एक गीत इस प्रकार है:-

"नायके रचारे दुजुब एन जा गोसायं,
बाहा बोंगा मुलुग एन दो;
देला बोन हो गोसायं ञेल गो करम दो,
देला बोन हो गोसायं ञेल गो सेंडेरा दो;
नायके रचारे दुजुब एन जा गोसायं,
बाहा बोंगा मुलुग एन दो।"4

इस गीत के माध्यम से पर्व-त्योहारों के समय का पता चलता है। फागुन माह के शुक्ल पक्ष के पाँचवें दिन बाहा पर्व मनाया जाता है। हमारी ये परंपराएँ पहले लिखित रूप में नहीं थीं; इन गीतों के माध्यम से ही संरक्षित थीं। माझी रामदास टूडू ने इन्हें लिपिबद्ध करके हमारी संस्कृति को अमर बना दिया।

इसी प्रकार उन्होंने मृत्यु संस्कार (गोज-गुर) का भी उल्लेख किया है। हम खेरवाड़ वंश के लोग पिलचु हडाम और पिलचु बुढ़ी की संतान हैं। पिलचु हडाम की मृत्यु के समय उनके पुत्रों ने जिन सामाजिक नियमों का पालन किया था, उन्हीं रीति-रिवाजों का वर्णन यहाँ किया गया है। भात बुस्तुम, उमुल आदेर (आत्मा का आह्वान), बोंगान डाकाव बांखेड़, श्राद्ध कर्म और भंदान बिंती आदि नियमों का पालन आज भी समाज में निष्ठापूर्वक किया जाता है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने करम बिंती को एक सुंदर कथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है। करमू और धरमू नामक दो भाइयों की गरीबी, और किस प्रकार करम गोसायं की कृपा से उनका जीवन सुख-समृद्धि (धान, गाय-गोरू) से भर गया—इसका वर्णन है। परंतु मन में अहंकार आने पर करम देवता के रुष्ट हो जाने से वे पुनः दरिद्र हो गए। बाद में १२ वर्षों के कठिन उपवास और तपस्या के बाद उन्होंने करम देवता को पुनः प्रसन्न किया। तभी से संताल समाज में करम पूजा का आयोजन पूरी निष्ठा और उपवास के साथ किया जाता है।

करम की डाल लाते समय गाया जाने वाला एक गीत:-

"सजाव-सजाव मे अमकि, मिड चुपुड गुरिज दो सजाव मे,
सजाव केदां अमका, मिड चुपुड गुरिज दो।
सजाव सजाव मे अमकि, मिड लोटा दग दो सजाव मे,
सजाव मेसे अमकि सवारिला दो सजाव मे।
सजाव सजाव मे अमकि, मिड तं कांसा थारि दो,
सजाव मेसे अमकि, मिड गोतं संकांरि संक दो।"5

इसी प्रकार सोहराय पर्व के गीतों के माध्यम से समाज के इतिहास को दर्शाया गया है। हमारे प्रथम पूर्वज पिलचु हडाम-पिलचु बुढ़ी का जन्म हिहिड़ी-पिपिड़ी में हुआ था, और उन्हीं के साथ गाय-बैलों का जन्म भी हुआ था। पशुओं के साथ मानव का संबंध माता-पिता के समान माना गया है:-

"एंगा अपा गाय डांगरा को बाबा को हो
गाय माको जनम लेन हिहिड़ी-पिपिड़ी
काडा माको जनम लेन मरदा झरना डरहा दग रे हो...
सोहराय बोंगा अमावास्या हिलोग
अपे रियग जिराउ महा दिन तापे हो...
गोड़ा दुवार रे बाटि जुलुग दिगिर-दिगिर हो..."6

निष्कर्ष (Gut Katha)

वास्तव में हम मनुष्य इस पृथ्वी के प्रथम मानव की संतान हैं। हमारी सामाजिक व्यवस्था, संस्कृति, धर्म और पूजा-पद्धति हमारी विशिष्ट पहचान हैं। अनेक कठिनाइयों को सहते हुए विलुप्त होती संस्कृति को बचाने के लिए एक संपूर्ण पुस्तक की रचना करना माझी रामदास टूडू "रस्का" का एक महान योगदान है, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता।

हालाँकि, कुछ विद्वानों का प्रश्न रहता है कि उन्होंने अपनी पुस्तक में गैर-संताल (दिकू) देवी-देवताओं के चित्रों का समावेश क्यों किया, किंतु हमें यह समझना चाहिए कि उन्होंने अपनी संस्कृति और परंपराओं को अक्षुण्ण रखने के महान उद्देश्य से यह कार्य किया। माझी रामदास टूडू "रस्का" का यह कार्य संताल समाज के इतिहास और संस्कृति को जीवित रखने में एक मील का पत्थर सिद्ध हुआ है।

संदर्भ (References)

1.टूडू, रामदास "रस्का", खेरवाल बोंगसा धरम पुथी, पृष्ठ १५
2.वही, पृष्ठ २०
3.वही, पृष्ठ १९१-१९२
4.वही, पृष्ठ १९४
5.वही, पृष्ठ १६४
6.वही, पृष्ठ २५१